# उपसंहार

# उपसंहार

हिन्दी गद्य साहित्य में आंचलिक उपन्यासो ने उपन्यास साहित्य को विकास की एक नई दिशा दी हैं। इस नई दिशा के हकदार नागार्जुन और फणीश्वरनाथ 'रेणु' हैं। इसके साथ ही समकालीन आंचलिक उपन्यासकारो मे उदयशंकर भट्ट, रांगेय राघव, देवेन्द्र सत्यार्थी, अमृतलाल नागर, शैलेश मटियानी, श्रीलाल शुक्ल, रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा आदि श्रेष्ठ है, जिन्होने हिन्दी आंचलिक उपन्यास साहित्य को समृध्द बनाने का प्रयत्न किया है।

इन सब में रामदरश मिश्र जी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। रामदरश मिश्र जी का जन्म उत्तर प्रदेश, जिला गोरखपुर के डुमरी नामक गांव में हुआ। यह गांव राप्ती और गोर्रा इन दो नदियों के बीच मे बसा हुआ है। दो नदियों के बीच में रहने के कारण यहाँ का वातावरण बादग्रस्त और अभाव, पीड़ाओं से भरा रहता है। ऐसे अभावग्रस्त देहात मे मिश्रजी का बचपन गुजर गया। इसी कारण मिश्र जी ने जो कुछ अनुभव किया है वही यथार्थ के रूप मे अपने उपन्यासों में चित्रित किया हैं।

स्वयं मिश्र जी के मतानुसार 'पानी के प्राचीर', ' जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब' ये तीन प्रमुख आंचलिक उपन्यास है। उनके उपन्यासों में उन्होंने गांवो का चित्रण किया है। उनके उपन्यास मे चित्रित गांव एक अलग-सा गांव है, जो उनका अपना गांव है। उत्तर प्रदेश के कछार अंचल का भूभाग ऐसा है, जो अपने भौगोलिक स्थिति के कारण नदियो से घिरा हुआ है। साथ-ही-साथ अंचलवासियों का पिछड़ापन, ग्रामांचल-युवकों की बेरोजगारी की समस्या और परंपरागत जाति-व्यवस्था के बीच घिरा हुआ दर्द भरा प्रेम मिश्रजी के आंचलिक उपन्यासो पर सबसे अधिक छाया हुआ दिखाई देता है।

रामदरश मिश्र के आंचलिक उपन्यासो मे स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत के उत्तर प्रदेश के 'कछार अंचल' मे बसे ग्रामवासियों के जीवन को तथा उनके जीवन में आने वाले बदलाव को देखने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के **प्रथम अध्याय** मे अंचल , आंचलिक और आंचलिकता शब्दों के अर्थ और पर्याय दिये है। आंचलिक उपन्यास परिभाषा, परिभाषा सम्बन्धी

निष्कर्ष, आंचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ, आंचलिकता ग्रामीण या शहरी ? और आंचलिक उपन्यास के तत्त्व आदि उपशीर्षकों के अन्तर्गत उनका सम्यक परिचय देने का प्रयत्न किया है।

'अंचल' शब्द का अभिप्रेत अर्थ है, "कोई स्थान विशेष, अर्थात भौगोलिक आदि सीमाओं से घिरा हुआ कोई जनपद या क्षेत्र।" 'आंचलिक' शब्द का हिन्दी उपन्यास के संदर्भ में अर्थ है, "अंचल सम्बन्धी ।" तो 'आंचलिकता' आंचलिक वैशिष्ट्य की अभिव्यक्ति का नाम है।

आंचलिक उपन्यास की विभिन्न परिभाषाओ को देखने के बाद एक समुचित परिभाषा मैनें बनाने की कोशिश की है- " आंचलिक उपन्यास में अंचल ही कथानक का नायक होता है, उसका सम्बन्ध विशिष्ट जनपद क्षेत्र की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक समाज और जन-जीवन से होकर अंचल की बोली-भाषा, भू-भाग, धर्म, जाति-वर्ग का जैसा-का-वैसा सर्वांगिण चित्रण जिस उपन्यास में किया जाता हैं, उसे 'आंचलिक उपन्यास' कहा जा सकता है।" विद्वानो ने 'अंचल विशेष' केन्द्र माना है और अंचल का जन-जीवन, भौगोलिकता, सांस्कृतिक परिवेश का सर्वांगीण चित्रण पर विशेष जोर दिया है। आंचलिकता ग्रामीण या शहरी? पर भी विवेचन करने का प्रयत्न रहा है। 'कोई शहर, नगर, ग्राम, कोई शहर का विशिष्ट क्षेत्र अंचल, मुहल्ला, वनों तथा उपवनों में स्थित जन-जीवन अंचल का विषय बन सकता है। इस अध्याय मे आंचलिक उपन्यासो के तत्त्वो को भी देखा है। कथानक का आंचलिक आधार, अंचल में लोक संस्कृति का चित्रण, अंचल मे अन्धविश्वास एवं धार्मिक जीवन, अंचल में चित्रित सामाजिक जीवन, अंचल का राजनीतिक जीवन, अंचल मे चित्रित अर्थ व्यवस्था आदि तत्त्वों को निश्चित किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के **द्वितीय अध्याय**में 'हिन्दी आंचलिक उपन्यास : उद्‌भव और विकास' का सम्यक् विवेचन किया है। आद्य हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में आंचलिकता की झलक, प्रारंभिक आंचलिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यासों का विकास युग और आंचलिक उपन्यास विकास यात्रा मे रामदरश मिश्र का आगमन आदि उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत अध्याय का विवेचन किया है।

विशेषकर जो आद्य हिन्दी आंचलिक उपन्यास माने गये है उनमें सिर्फ आंचलिकता का अंश ही दिखाई देता है। प्रेमचन्द और उनके समय के उपन्यासकारो का आंचलिक

उपन्यासों की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभिक स्वरूप ग्रामांचलों तक सीमित था। आज उसका स्वरूप बदल गया है। आंचलिक उपन्यास विकास युग में शहरी आंचल, शहर का विशिष्ट क्षेत्र, मुहल्ला, उपवन आदि आंचलिक उपन्यासों के विषय बन गये। इनमें स्थानिय रंग अधिक उभर कर आए। सच्चे अर्थों में आंचलिक उपन्यासों का विकास युग सन १९५४ से १९८० माना जाता हैं, जिसमें आंचलिकता के सभी तत्त्वों का पूर्णता विकास एवं प्रयोग दिखाई देता हैं। इसी बीच समकालीन आंचलिक उपन्यासकारों के साथ रामदरश मिश्र जी का आगमन हुआ। उन्होंने 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' और ' सूखता हुआ तालाब' जैसी तीन मौलिक रचनाएँ आंचलिक उपन्यास विकास यात्रा को समर्पित की है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के **तृतीय अध्याय** 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आंचलिकता का मूल्यांकन, में रामदरश मिश्र जी के प्रमुख तीन आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया हैं।

रामदरश मिश्र जी के 'पानी के प्राचीर' और 'जल टूटता हुआ' उपन्यास का भूभाग वहीं कछार अंचल है, लेकिन दोनों उपन्यासों में समय का अंतर है। तीसरा आंचलिक उपन्यास 'सूखता हुआ तालाब' पहले दो उपन्यासों के क्रम में आता है, लेकिन ग्राम-जीवन के बदलते रूपों का इसमें चित्रण है।

**१)कथानक का आंचलिक आधार –**

'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब' में कथानक का प्रारंभ, नायक, ग्रामंचल का पिछड़ापन, भौगोलिक स्थिति, अंचल में जमीदारी प्रथा, जाति-प्रथा, बाद की समस्या, वेदना से भरा नारी जीवन और अंचल की राजनीति आदि कई कारणों से कथानक को आंचलिक आधार प्राप्त हुआ है।

**२)अंचल में लोक संस्कृति का चित्रण –**

आंचलिक उपन्यास का सम्बन्ध जिस अंचल विशेष से होता है, उसकी सांस्कृतिक स्थितियां अन्य अंचल से भिन्न होती है। रामदरश मिश्र जी के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक वातावरण भी एक अलग-सा दिखाई देता है। होली, नागपंचमी, दशहरा त्यौहार और उस समय गाये जाने वाले लोकगीत, ऋतू गीत, संयोग-वियोग शृंगार पर भी लोकगीत पाये जाते है। ग्रामांचल महिलायें खेतों में काम करती हैं, तब किसान गीत, शादी के समय के बिदाई गीत, शोक गीत, फिल्मी गीत

पर आधारित भजन आदि के व्दारा अंचल में स्थित जन-जीवन के पहलुओं का चित्रण लोकगीतों व्दारा दिखाई देता है।

**३) अंचल में अंधविश्वास एवं धार्मिक जीवन-**

रामदरश मिश्र जी के आंचलिक उपन्यासो में चित्रित अनपढ़, अज्ञानी लोग विभिन्न देवी-देवताओं, जादू-टोना, भूत-प्रेत, पूजा-पाठ, जन्तर-मन्तर आदि में विश्वास रखते हुए दिखाई देते हैं। अंचलवासी 'भाग्यवादी' अधिक बने हैं।

मिश्र जी के आंचलिक उपन्यासों मे जो धार्मिक जीवन दिखाई देता है, वह परंपरागत है। यहां के लोग विधवा का मुँह देखना अशुभ मानते हैं। पक्षियों की आवाज, प्राणियों का चिल्लाना आदि के कारण अंचलवासियों के मन मे अनेक सगुन-असगुन उत्पन्न होते हैं। ग्रामांचल के सिर्फ अज्ञानी ही नही तो पढ़े लिखे, समझदार और ज्ञानी लोग भी अन्धविश्वासी दिखाई देते हैं।

**४) अंचल में चित्रित सामाजिक जीवन-**

जाति-व्यवस्था ग्रामांचल में स्थित सामाजिक जीवन का प्रमुख आधार रहा है। रामदरश मिश्र जी के आंचलिक उपन्यासों मे विविध परंपराएँ, जाति-पाँति प्रथा तथा ऊँच-नीचता को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

ग्रामांचलों में रहने वाले स्त्री-पुरूषों में आज भी सामाजिक न्याय के प्रति असमानता दिखाई देती हैं। यहां की नारी पिछड़ी हुई और अन्यायों के घेरे में बसी दिखाई देती हैं। ग्रामांचल मे बेटी पैदा होती है, तब परिवार वालों को खुशी नहीं होती। आज भी ग्रामांचल में स्त्री निःसंतान रहती है, तो उसकी ओर परिवार के सभी सदस्यों की दृष्टि कुछ घिनौनी होती है। दहेज के कारण आज भी अनेको माता-पिता ने अपनी-अपनी लड़कियों का विवाह अधिक उम्र के पुरूष से कर दिया हुआ दिखाई देता हैं, जिसका बुरा असर उस लड़की को उम्र भर भुगतना पड़ता है। विधवा के बाल मुँड़वाने की प्रथा आज भी मौजूद है। नारी शिक्षा के प्रति भी कोई खास आर्कषण नहीं है।

छूआछूत, ऊँच-नीच का भेद-भाव करने वाली कुप्रथाएँ सदैव विद्यमान दिखाई देती हैं। सजातीय और विजातीय प्रेम सम्बन्धो को भी यहां विरोध है। अधिकतर लोग अनपढ होने के कारण आपसी ईर्ष्या, व्देष, जातिवाद आदि के भाव अधिक प्रबल रहते हैं। यहां के लोग बदले की भावना से इतने क्रोधित होते हैं कि आगे कुछ भला-बुरा

कर बैठते हैं, जिसका परिणाम पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है। उत्तर प्रदेश के कछार अंचल का सामाजिक जीवन रूढ़ी ग्रस्त है, जिसका एक अपना अलग मूल्य एवं स्थान हैं।

**५)अचंल का राजनीतिक जीवन-**

पंचायत चुनाव , राजनीतिक षड्यंत्र, पुलिस कर्मचारियों का रौब, चकबन्दी, राजनीतिक दलों का प्रभाव, दोगी नेता उनका राजनीति पर होनेवाला प्रभाव आदि बातों का सम्यक चित्रिण किया है।

मिश्र जी के उपन्यासों में पंचायत व्यवस्था का विविधमुखी चित्रण दिखाई देता हैं। चुनाव जीतने के लिए स्वार्थी लोग अलग-अलग षड्यंत्र भी रचते हैं। यहां की पुलिस जनता की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठा ने के बजाय उन पर रौब दिखाती है और रिश्वत भी लेती हैं। आजादी के बाद भ्रष्ट नेताओं का निर्माण अधिक हुआ। जो लोग ब्रिटिश सरकार के पक्के हिमायती, प्रजा के बड़े दुश्मन थे, वे आज जनता के प्रतिनिधि बन गये । जो धनवान हैं वही आज देश के नेता हैं। मिश्र जी के आंचलिक उपन्यासों में राजनीतिक जीवन दो भागों मे विभक्त हो गया है- एक आजादी के पूर्व का और दूसरा आजादी के बाद का राजनीतिक जीवन।

**६) अंचल में चित्रित अर्थ- व्यवस्था-**

ग्रामांचलों में आज भी आर्थिक जीवन कमजोर है। मिश्र जी के उपन्यासों में जमींदार, महाजन, मुखिया, पुलिस, सरकारी कर्मचारी एवं अधिकारी वर्ग ने ग्रामवासियों को विविध कारणों से लूट लिया था। कारण ग्रामीण जनता का जीवन दीन-हीन हो गया। बेकारी, भ्रष्टाचार, ऋण की समस्याओं के साथ-साथ अकाल, महामारी ने ते अंचलवासियों की आर्थिक जीवन दशा और भी दयनीय बन गई थी। उपजीविका का एक मात्र साधन मजदूरी सदैव स्थित रही है, जिस में मालिक-नौकर जैसी आर्थिक विषमता की खाई बनी रही।

जमीदारों का रौब ग्रामवासियों पर तो सदैव स्थित रहा। साथ-साथ निर्धन जातियों की पेट की समस्या, भोजन की समस्या, बाढ़ की समस्या, वस्त्र की समस्या, ऋण की समस्या, बेरोजगारी आदि अनको समस्याओं के पीछे जो मूल है, वह है अर्थ, जो न होने के कारण ग्रामवासियों को अनेको खाई मे ढकेल देती हैं। लाख कोशिशों के

बाद भी ग्रामांचल की निम्न जातियाँ एवं मध्य वर्ग आज भी आर्थिक विकास के अभाव में पिछड़े हुए हैं।

इस प्रकार रामदरश मिश्रजी के उपन्यासो में आंचलिकता का मूल्यांकन करते जो तथ्य हाथ लगे उनपर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के **चतुर्थ अध्याय** मे 'आंचलिक प्रदेश मे बदलाव' शीर्षक के अंतर्गत ग्रामांचलवासियों के जीवन मे आने वाले विविध बदलावों को उजागर करने का प्रयत्न रहा हैं। अंचलवासियों की लोकसंस्कृति, धार्मिक जीवन, सामाजिक जीवन, राजनीतिक जीवन, आर्थिक दशा तथा रहन-सहन पर महानगरों तथा पाश्चात्यों का प्रभाव पड़ रहा हैं। कुछ नये विचारों का बीज बोया जा रहा है।

त्यौहारों के प्रति उनकी दृष्टि बदल रही हैं। उनमें अंधश्रध्दाओं के बजाय आधुनिकता एवं नव दृष्टि आ रही हैं। अंचलवासी आज भूत प्रेत को मानने से इन्कार कर रहे हैं। हिस्टीरिया का दौरा एक मन की कमजोरी है, यह वह जानने लगे हैं। पिछड़े अंचलवासियों को भी शिक्षा का महत्त्व मालूम होने लगा है। अंचलवासी लड़कियों को भी शिक्षा देने लगे हैं।

शिक्षा के कारण ही गांवो में रचनात्मक बदलाव आने लगे है। बाल विवाह को ग्रामांचलों में विरोध हो रहा है। विधवा के प्रति उदारभाव से देखा जा रहा हे। आन्तरजातीय विवाह होने लगे हैं। औरतों को वोट का अधिकार दिया जा रहा है। अत्याचारों के विरूध्द खुद नारी लड़ने के लिए तैयार हो रही है। शोषण के प्रति भी ग्रामांचलों में सजगता आ गई हैं। राष्ट्र प्रेम की भावना, आजादी का आंदोलन, बदलता राजनीतिक जीवन, अधिकारों के प्रति सजगता आदि सब कारणों से ग्रामांचलों में परिवर्तन आ रहा है।

इस प्रकार इस लघु-शोध-प्रबंध मे रामदरश मिश्र के तीन प्रमुख आंचलिक उपन्यासों का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है।